अध्याय पाँच

संत भिनकराम जी

[संत भिनकराम जी सरभंग संप्रदाय के संस्थापक आ प्रमुख संत रहीं । इहाँ के जनम सारण जिला (अब सीवान जिला) का माघर गाँव में लगभग दू सै बरिस पहिले भइल रहे । इहाँ का चम्पारणो के आपन कार्यक्षेत्र बनवलीं । इहाँ के गुरु रहीं- परमसन्त दुनियाराम बाबा जिनकरा समाधि पर एगो मन्दिर बनल बा । 'भिनक दर्शन माला' में इहाँ के दू सौ पद संग्रहित बा । सरभंग सम्प्रदाय के कईगो मठ-मन्दिर सारण आ चंपारण में बा ।]

संत भिनकराम जी

: 1 :

केऊ ना संग साथी वंदे ।।टेक।।

जइसे सती हँसकर वंदे ऊ काया जन जाती ।

दिन चार राम के भजिले बान्ह का ले जइबऽ गाँठी ।

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

भाई भतीजा हिलमिल के बइठे ओही बेटा ओही नाती ।
अंतकाल केहू काम ना अइहें समुझि समुझि फटि छाती ।
जम्हु राजा के पेआदा जब अइले आइ रोके घँट छाती ।
प्राण निकल बाहर हो गइले तन मिल गइले माँटी ।
खाइल पिअल भोग बिलास ई न जात संग साथी ।
सिरी भिनक राम दया सतगुरु के सतगुरु कइले साँची ।

: 2 :

आगि लागे बनवा जरे परबतवा
मोरे लेखे हो साजन जरे नइहरवा ।
आव आव बभना बइठु मोर अँगना ।
सोचि देहु ना मोर गुरु के अवनवा ।
जिन्हि सोचिहें मोरा गुरु के अवनवा ।
तिन्हें देबों ना साजन ग्यान के रतनवा ।
नैना भरि कजरा लिलार भरि सेनुरा ।
मोरे लेखे सतगुरु भइले निरमोहिया ।
सिरी भिनिकराम स्वामी गावले निरगुनवा ।
धाइ धरबो हो साधु लोग के सरनवा ॥

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

अभ्यास

बहुविकल्पी/वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. स्वामी भिनकराम जी कवना पंथ के स्थापना कइलीं ?
   (क) कबीर पंथ (ख) सरभंग सम्प्रदाय
   (ग) अघोर पंथ (घ) कवनो पंथ के ना
2. गुरु के आगमन सुनावे वाला के भिनक राम जी का देवे के कहत बानी ?
   (क) ग्यान के रतनवाँ (ख) नैना भरि कजरा
   (ग) लिलार भरि सेनुरा (घ) कुछऊ ना ।

अति लघुउत्तरीय प्रश्न

1. 'सद्गुरु कइले साँची' के अर्थ का बा ?
2. संतकवि के छाती का समुझि के फाट रहलि बा ?
3. तन माटी मिल गइला पर जीव का संगे का जाला ? दू वाक्य में आपन विचार लिखीं ।
4. 'मोरे लेखे हो साजन जरे नइहरवा' -कहके भिनक राम का कहे के चाहतानी ?
5. भिनकराम जी बाभन के आंगन में बइठा के का जाने के चाहत बानी ?

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. 'केऊ ना संग साथी बन्दे' पद में भिनक राम जी कवना बात के उजागर करत बानी ? पूरा पद के अर्थ समझा के लिखीं ।
2. 'दिन चार राम के भजि ले' के सुझाव भिनक राम जी काहे दे रहल बानी ?
3. 'मोरे लेखे सतगुरु भइले निरमोहिया' कहके भिनक राम जी अपना निरगुन में का कहे के चाहत बानी ? समुझा के लिखीं ।
4. 'धाइ धरबों हो साधु लोग के सरनवाँ' कहके संत कवि कवना बात कावर इशारा कर रहल बानीं ? एह से का लाभ होई ?

परियोजना

1. सरभंग सम्प्रदाय के विशेषतन का बारे में अपना शिक्षक से पता करीं ।

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

अध्याय छव

डॉ. उदयनारायण तिवारी

[डॉ. उदयनारायण तिवारी के जनम उत्तरप्रदेश के बलिया जिला के पोपरपाँती नाँव के गाँव में भइल रहे । इहाँ के प्रयाग आ जबलपुर विश्त्रविद्यालय में अध्यापन कइलीं । भाषा विज्ञान के क्षेत्र में इहाँ के महत्त्वपूर्ण योगदान बा । इहाँ के प्रमुख कताबन के नाँव एह तरह से बा- भोजपुरी भाषा आ साहित्य, हिंदी भाषा का उद्गम आ विकास आदि ।

इहाँ के अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के पहिला अधित्रेशन (इलाहाबाद) के अध्यक्ष बनल रहीं ।]

ग्रियर्सन आ सुनीतिकुमार चटर्जी

बात सन् 1930 के ह । अप्रैल के महीना रहे आ पटना में प्राच्यविद्या-सम्मेलन के जलसा रहे । ओहमें शामिल होखे खातिर हम पटना गइलीं । हम सन् 1929 में, अर्थशास्त्र में एम.ए. पास कइके, आगे कुछ करे खातिर एने-ओने घूमत रहलीं । एगो

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

अइसना गुरु का खोज में रहलीं जे आगे बढ़े के रास्ता बताओ । मन में सोचलीं कि पटना में बड़का बिदवान लोग के जुटान हो रहल बा, साइत इहवें केहू मिल जाय ।

प्राच्यविद्या-सम्मेलन के सभापति रहले कटनी (मध्यप्रदेश) के डॉ. हीरालाल आ स्वागत-समिति के अध्यक्ष रहले पटना के, इतिहास के बड़का विद्वान डॉ. काशीप्रसाद जायसवाल । प्राच्य विद्या-सम्मेलन के खुला अधिवेशन ह्वीलर हॉल में भइल । भाषा-विज्ञान के गोष्ठी ओकरा पासे के एगो कमरा में भइल ।

भाषा-विज्ञान का गोष्ठी के सभापति बम्बई के आई.जे. एस. तारापुरवाला रहले । एही गोष्ठी में हम सुनीति बाबू के अंग्रेजी में भाषण देत सुनलीं । उनुकर नाम हम पहिले से सुनले रहलीं । ऊ बंगाली कुरता-धोती पहिरले रहले आ उनुकरा गर में एगो सफेद चद्दर रहे ।

जब सुनीति बाबू भाषण देके बाहर निकलले त हम उनका लगे जाके अंग्रेजी में कहलीं -'हम रउए से मिले खातिर आइल बानी ।' ऊ हमरा के अँकवारी में लेके बोललें -'हम हिन्दी अच्छी तरे जानत बानी, हिन्दिए में बोलीं ।' हमार मन खुस हो गइल । हम एके साँस में कहीं -'हम अर्थशास्त्र में एम.ए. हईं । संस्कृत पढ़ले बानी, हिन्दिओ अच्छी तरह से जानीले ।

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

हमार मातृभाषा भोजपुरी ह । का रउआ हमरा से कवनो काम ले सकबि ?' सुनीति बाबू हमरा के अँकवारी में लिहले बाहर अइले आ कहले -'आज के दिन बड़ा खुशी के बा । हम बहुत दिन से एगो भोजपुरी चेला का टोह में रहलीं हाँ, से तूँ आजु मिल गइल ।'

एकरा बाद ऊ हमरा के पटना कॉलेज के प्रिन्सिपल रगीन हाल्दार का डेरा प ले गइले, जहवें ऊ ठहरल रहले । उहवाँ उनकर दूगो अउरी विद्वान साथी पं. विधुशेखर शास्त्री आ डॉ. प्रबोध बागची ठहरल रहले । ओह दूनो जना से हमार परिचय करावत डॉ. चटर्जी कहले -'हमार जतरा सुफल हो गइल, हमरा के एगो भोजपुरी चेला मिल गइल ह ।'

डॉ. चटर्जी खाये-पीये के बड़ा सवखीन रहले । ऊ तुरन्ते जलखई मँगवले आ हमरा के खिआइ के कहले -'अब दू-तीन दिन तूँ हमरे साथे रह; हम तोहरा के भाषाविज्ञान प लेकचर देब ।'

हम उनुका साथे रहे लगलीं आ ऊ हमरा के भाषाविज्ञान पढ़ावे लगलें । ऊ बराबर हिंदिए बोलसु, बाकी बीच-बीच में अंग्रेजिओ के एगो-दूगो शब्द आ जाय । ऊ हमरा के बलिया के भोजपुरी के व्याकरण लिखे के कहले । ऊ कहले जे ई व्याकरण

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

इलाहाबाद युनिवर्सिटी के डॉ. बाबूराम सक्सेना का देख-रेख में लिखे के परी । ई व्याकरण डॉ. सक्सेना का लखीमपुरी नियन होखी । डॉ. सक्सेना अपना मातृभाषा, लखीमपुर का अवधी, के व्याकरण प्रो. टर्नर का देख-रेख में लिखले रहले आ ऊ व्याकरण 'इंडियन ऐंटीकेरी' में छपल रहल । डॉ. चटर्जी से हम कहलीं जे अपने ठीक समझीं त हम अपने का साथे कलकत्ता चल चलीं । ऊ कहले जे अबहीं कलकत्ता चले से कुछ ना होई, बराबर अपना पढ़ाई-लिखाई का बारे में हमरा के चिट्ठी लिखत रहिह, जब हम देख लेब कि ठीक समय आ गइल बा त हम तोहके कलकत्ता बोला लेब ।

हम इलाहाबाद आके डॉ. बाबूराम सक्सेना से मिललीं आ उनुका देख-रेख में 'ए डायलेक्ट ऑव भोजपुरी' शोध-निबन्ध लिखल शुरू कइलीं । एह निबंध के आधार बलिया के भोजपुरी रहे । ई लेख सन् 1936-37 ई. का 'बिहार-उड़ीसा रिसर्च सोसाइटी के जर्नल' में अंग्रेजी में छपल । एह जर्नल के संपादक डॉ. काशीप्रसाद जायसवाल रहले ।

सन् 1931 में, हम आगरा युनिवर्सिटी से हिन्दी में एम.ए.

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

कइला । पाछे क पढ़ाइ हम राहुल जा, भदन्त आनन्द कौसल्यायन

आ भिक्षु जगदीश काश्यप से कइलीं ।

सन् 1940 ई. का जून में सुनीति बाबू के चिट्ठी मिलल । लिखले रहले जे डी.लिट् के शोध-प्रबंध (थीसिस) लिखे खातिर जुलाई-अगस्त में कलकत्ता पहुँच । हम एक अगस्त के कलकत्ता पहुँचलीं । उहाँ जाके हम कलकत्ता युनिवर्सिटी का फिलॉलॉजी-विभाग के, नियमित रूप से छात्र बन गइलीं आ 1941 में एम.ए. पास क लिहलीं । ई हमार चउथा एम.ए. रहे । एह घरी हमार उमिर ठीक सैंतिस साल के रहे ।

अब हम आपन डी.लिट् के शोध-प्रबंध लिखे में जुटलीं । विषय रहे -**'भोजपुरी के उत्पत्ति आ विकास ।'** एह प्रबन्ध के इलाहाबाद युनिवर्सिटी में प्रस्तुत करे के रहे । हम हर चउथा-पचवाँ दिन आपन लिखल देखावे खातिर सुनीति बाबू का घरे जाईं आ दुपहर के भोजन उनुकरे घरे क के साँझी खा अपना डेरा प लवटीं । साँझ के बालीगंज के लेक का ओर घूमत खानी सुनीति बाबू तरह-तरह के अपना अनुभव के कहनी सुनावसु ।

एक दिन ग्रियर्सन साहेब का बारे में बात चलल । सुनीति बाबू कहलन जे हम ग्रियर्सन अइसन बड़ आदमी ना देखलीं । सुनीति बाबू सन् 1919 में सरकारी वजीफा प विलायत गइल रहन । ओह घरी लन्दन युनिवर्सिटी के बड़का अफसर डेनिसन

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

रास रहले । एकरा पहिले ऊ कलकत्ता में अरबी मदरसा के प्रिन्सिपल रहले । सन् 1905 ई. के बंग-भंग का बाद कलकत्ता के राजनीतिक स्थिति बड़ा खराब हो गइल रहे । पहिले त स्वदेशी आन्दोलन चलल । एकरा बाद अंग्रेज आ बंगाली लोग में बड़ा तनातनी हो गइल, आ बम चले लागल । डेनिसन रास ई सभ तमाशा देखिके बिलाइत गइल रहले । उनुके देख-रेख में चटर्जी साहेब का आपन शोध-प्रबन्ध 'बंगला भाषा के उत्पत्ति आ विकास' लिखे के रहे । जब उनुका से मिलले त इनके देखते उनुकर मिजाज गरम हो उठल । ऊ कहले, 'तूँ बंगाली हव, कलकत्ता जाके बम बनाव, शोध-प्रबन्ध लिखला के कवन काम बा ?'

सुनीति बाबू बड़ा दुखी होके लन्दन युनिवर्सिटी का बोर्डिंग में लवटि अइले । एही समय पंजाब से श्री शान्ति स्वरूप भटनागर लन्दन गइल रहले । ऊहो सुनीति बाबू का साथे लन्दन युनिवर्सिटी का बोर्डिंग में रहत रहले । ऊ उर्दू के कवि रहले । सुनीति बाबू के शेर सुनावल करसु आ प्रायः कहसु 'कायस्थ भी हूँ, आधा मुसलमान भी हूँ ।'

सुनीति बाबू के दिन बेकारी में कटे लागल आ डेनिसन रास किहाँ जाय के उनुकर हिम्मत ना पड़े । एक दिन सुनीति बाबू

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

का एगो अंग्रेज से भेंट भइल । ऊ अलीपुर में एगो अफसर रहले । सुनीति बाबू उनुका से आपन दुख कहले आ मदत मंगले । ऊ कहले, 'हमरा के इहवाँ केहू नइखे जानत । हम कवनो मदद ना दे सकीले । एहमें ग्रियर्सन साहेब मदद दे सकेले । ऊ इहवाँ से चार-पाँच स्टेशन आगे राथफार्नहम में रहेले । ऊ हिन्दुस्तान का लोगन के खूब मदद करेले । ऊ इहवाँ के बहुत बड़ आदमी हवन । उनुका के पत्र लिखीं आ मिलीं । राउर काम हो जाई ।'

सुनीति बाबू ग्रियर्सन के चिट्टी लिखले । उनुकर चिट्ठी पवते ग्रियर्सन लिखले -'ब्रिटिश म्युजियम का फलाना अलमारी में, बंगाल से आइल एगो हाथ के लिखल पोथी बा । ओकर नाम ह 'प्राकृतपैंगलम्' । ओकर व्याकरण लिखके भेजीं । सुनीति बाबू चार-पाँच दिन में सत्तर पेज के व्याकरण लिखके ग्रियर्सन का पास भेज दिहले । ग्रियर्सन का उनुका ज्ञान के थाह मिल गइल । ऊ चटर्जी के नेवता भेजले आ अपना घरे बोलवले ।

सुनीति बाबू उनका घरे पहुँचले त देखले जे एगो बड़का सुग्गा (काकातुआ) पिंजड़ा में बा आ बोलता -'राम नाम बोल मनवाँ, राम नाम बोल' । ग्रियर्सन चटर्जी से कहले -'हम रोज चिउरा-दही के जलखई करीले । एह बात में हम बिहारी हईं । बंगाली लोग दही में चीनी डालके जमावेला । ऊ दही हमरा नीक

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

ना लागे । हम रोज भोजपुरी दही खाईले । हमार पत्नी आरा (भोजपुर) से दही जमावे के ढंग सीख आइल बाड़ी । भोजपुरी लोग सोन्हावल कँहँतरी में दही जमावेला । ऊहे दही हमरो घरे जामेला । हम दूगो मुर्रा भँइसि रखले बानी । हमरा दही में चारि अँगुरी के मोट सारही रहेला । पहिले गरम दूध में चिउरा भिँजा दीहल जाला । जब ऊ फूल जाला तब ओहमें मोटकी सारही के दही-चीनी मिला के पनपियाव करीले । सुनीति बाबू के ईहे दही-चिउरा खिया के ग्रियर्सन उनुकर खातिर कइले । दुपहर के भोजन कके सुनीति बाबू लन्दन अपना बोर्डिंग में लवटि अइले ।

एक बेरि अउरी ग्रियर्सन साहब चटर्जी के बोलाके खियवले-पियवले आ ओइसहीं खातिर से भेजले । एने जइसे-जइसे समय बीतत जाय ओइसे-ओइसे सुनीति बाबू के चिन्ता भी बढ़त जाय । छव महीना बीते लागल आ काम कुछुओ ना भइल । जब तिसरका बेर चटर्जी के खातिरदारी कके ग्रियर्सन भेजे लगले त उनुका से ना रहल गइल ! ऊ कुछु कहे चाहत रहले बाकी ग्रियर्सन मना क दिहले । ऊ निराश होके फेनु लन्दन का बोर्डिंग में लवटि अइले । एह पारी उनुका कमरा में डनिसन रास के एगो

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

चटर्जी अचरज आ चिन्ता में पड़ गइले । ऊ डेरात-डेरात डेनिसन रास का घरे गइले । उनुकर स्त्री-सुनीति बाबू के ओवरकोट उतारके खूँटी पर टाँग दिहली आ बड़ा प्रेम से बइठवली। एकरा बाद डेनिसन सुनीति बाबू से प्रेम से पूछले -'रउआ के ग्रियर्सन साहेब अतना नगीच से कइसे जानताड़े ? साइत रउआ ई ना मालुम होई कि ग्रियर्सन का कृपा से हमरा ई पद मिलल बा । उनुका के हम गुरु का तरह मानीले । हमरा ई कहाँ मालूम रहल हा कि रउआ बड़का पंडित हईं । हम त रउआ के मामूली छात्र समुझ के कुछ कह दिहलीं । हमरा के माफ करीं । अब रउआ आपन शोध-प्रबंध लिखल शुरू करीं आ ओके ग्रियर्सन के देखाके सही करा लीं । रउआ जे कुछु लिखब ऊ ठीके होई ।'

सुनीति बाबू एकर का जबाब देसु । ऊ चकित होके सब बात सुनत रहले । ना मालूम, ग्रियर्सन डेनिसन रास के कवन बात लिख दिहले जेकर उनका ऊपर अतना प्रभाव पड़ल ।

एकरा बाद सुनीति बाबू डी.लिट्. के शोध-प्रबंध लिखे लगले आ ऊ एक दिन पूरा हो गइल । अपना एह शोध-प्रबंध में सुनीति बाबू ग्रियर्सन के भीतरी आ बाहरी भाषा के सिद्धांत के खंडन कइले बाड़न, बाकी एह बात के ग्रियर्सन बुरा नइखन मनले आ बड़ा खुशी से उन्हुकर शोध-प्रबंध **'ओरिजिन ऐण्ड**

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

डेवेलपमेण्ट ऑव बेंगाली लैंग्वेज' के भूमिका लिखले बाड़न । सुनीति बाबू के डी.लिट्. के उपाधि मिलला का बाद ग्रियर्सन एगो भोज दिहले जेह में डेनिसन रासो के नेवतले रहले ।

सन् 1941 ई. में लगभग सय बरिस का उमिर में ग्रियर्सन के निधन भइल । पहिले कलकत्ता में उनुकर नियुक्ति भइल रहे, बाकी कुछ साल का बाद ऊ बिहार में आ गइले । ऊ दरभंगा, पटना, गया आ आरा (भोजपुर) में आपन जिनिगी बिता दिहले । ग्रियर्सन बिहारी भाषा (मगही, मैथिली, भोजपुरी) के गहराई से अध्ययन करेवाला पहिला आदमी रहले । ऊ मैथिली, मगही आ भोजपुरी का व्याकरण का बारे में सात गो पोथी लिखलें । ऊ हिन्दी-साहित्य के इतिहास, तुलसी आ जायसी पर भी किताब लिखले ।

ग्रियर्सन साहब अद्भुत आदमी रहले । उनुकर अभिजन (मूल स्थान आ जन्मभूमि) आयरलैंड में रहे, बाकी अवकाश लिहला का बाद ऊ लन्दन का पास के एगो गाँव में रहे लगले । ऊ बहुत बड़ विद्वान रहले ।

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

अभ्यास

बहुविकल्पी/वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. ई निबंध कवना तरे के बा ?
   (क) विवरणात्मक (ख) विचारात्मक
   (ग) संस्मरणात्मक (घ) समीक्षात्मक
2. डॉ. काशीप्रसाद जायसवाल कवना विषय के विद्वान रहीं ?
   (क) प्राच्यविद्या (ख) हिन्दी साहित्य
   (ग) भूगोल (घ) इतिहास
3. डॉ. उदयनारायण तिवारी 1929 ई. में कवना विषय में एम.ए. पास कइले रहस ?
   (क) अर्थशास्त्र (ख) भाषा विज्ञान
   (ग) समाजशास्त्र (घ) इतिहास
4. डॉ. बाबूराम सक्सेना 'अवधी के व्याकरण' केकरा देखरेख में लिखले रहस ?
5. पाठ का अनुसार भाषाविज्ञान का गोष्ठी के सभापति के रहे ?

अति लघुउत्तरीय प्रश्न

1. उदयनारायण तिवारी के परिचय अपना साथी विद्वान लोग से कइसन चटर्जी साहब का कहले ?

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

2. डॉ. चटर्जी कहवाँ के भोजपुरी के व्याकरण लिखे के सलाह तिवारी जी के दिहले ?
3. डॉ. उदयनारायण तिवारी के शोध-प्रबन्ध के विषय का रहे ?
4. डॉ. सुनीतिकुमार चटर्जी का डी-लिट् के शोध-प्रबन्ध के विषय का रहे ?
5. सुनीति बाबू का करे लन्दन गइल रहस ?
6. ग्रियर्सन के पोसल सुग्गा का बोलत रहे ?
7. ग्रियर्सन कवना बात में अपना के बिहारी मानस ?
8. भोजपुरिया लोग दही कइसे जमावेला ?
9. ग्रियर्सन के पत्नी दही जमावे के ढंग कहवाँ सिखले रही ?
10. सुनीतिबाबू के देखते डेनिसन रास के मिजाज काहे गरम हो गइल ?
11. जलखई के तीन गो पर्यायवाची शब्द लिखीं ।
12. सुनीति बाबू ग्रियर्सन का कवना सिद्धान्त के खंडन अपना शोध -प्रबन्ध में कइले बाड़े ?

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. ग्रियर्सन एगो अद्भुत विद्वान आदमी रहस । उनका महत्त्वपूर्ण काम के चरचा दस पंक्ति में करीं ।
2. ग्रियर्सन का सुनीति बाबू के ज्ञान के थाह कइसे मिलल ? समझा के संक्षेप में लिखीं ।
3. पाठ का आधार पर ग्रियर्सन का व्यक्तित्व का बारे में लिखीं ।

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

4. ग्रियर्सन बहुत बड़ आदमी रहले । एह संस्मरण लेख के आधार पर कवनो तीन गो घटना के जिकिर करत उनका बड़प्पन के उल्लेख करीं ।

भाषा

1. नीचे दिहल शब्दन के वर्गीकरण करीं–
   जलखई, सुफल, अँकवारी, जुटान, सवखीन, नियन, साँझी खा, तनातनी, भेंट, सोन्हावल ।
2. पाठ में आइल पाँच गो मुहावरा चुन के ओकर अर्थ लिखीं ।
   जइसे– मिजाज गरम भइल, दिन कटल, थाह मिलल ।
3. निम्नलिखित शब्दन के अर्थ लिखीं–
   सारही, पनपियाव, कँहँतरी, पोथी ।

परियोजना कार्य

1. भोजपुरी क्षेत्र में दही कवना तरह से आ कवना चीज में जमावल जाला पता कके लिखीं ।
2. का बिना जोरन के दही जमी ?.प्रयोग क के बताईं ।

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

अध्याय सात

हीरा डोम

[हीरा डोम भोजपुरी के गौरव रहस । उहाँ के कविता 'अछूत की शिकायत' आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी के संपादन में निकले वाली पत्रिका 'सरस्वती' में सितम्बर 1914 में छपल रहे । द्विवेदी जी भाषा का संबंध में अपना कठोर अनुशासनप्रियता खातिर जानल जात रहीं । एह घड़ी हिंदी में दलित साहित्य के शुरुआत एही कविता से मानल जाता । हीरा डोम पटना जिला के दानापुर आ मनेर का बीचे के भोजपुरी भाषी गंगा के दियारा क्षेत्र के रहनियार रहीं ।]

अछूत की शिकायत

हमनी के राति दिन दुखवा भोगत बानी ।
हमनी के सहेबे से मिनती सुनाइबि ॥
हमनी के दुख भगवनओ न देखता जे ।
हमनी के कबले कलेसवा उठाइबि ॥

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

पदरी सहेब के कचहरी में जाइबि जां ।
बेधरम होके रंगरेज बनि जाइबि ॥
हाय राम ! धरम न छोड़त बनत बा ते ।
बेधरम होके कैसे मुँहवा देखाइबि ॥1॥

खंभवा के फारि पहलाद के बचवले जे ।
ग्राह के मुँहे से गजराज के बचवले ॥
धोती जुरजोधना के भइआ छोरत रहे ।
परगट होके तहाँ कपड़ा बढ़वले ॥
मरले रवनवाँ के पलले भभिखना के ।
कानी अंगुरी पै धैके पथरा उठवले ॥
कहँवा सुतल बाटे सुनत न बाटे अब ।
डोम जानि हमनी के छुए से डेरइले ॥2॥

हमनी के राति दिन मेहनत करीले जा ।
दुइगो रुपयवा दरमहा में पाइबि ॥
ठकुरे के सुख से त घर में सुतल बानीं ।
हमनी के जोति जोति खेतिया कमाइबि ॥
हकिमे के लसकरि उतरल बानीं ।
जे त उहओं बेगरिया में पकरल जाइबि ॥
मुँह बान्हि ऐसन नोकरिया करत बानीं ।
ई कुलि खबरि सरकार के सुनाइबि ॥3॥

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

बभने के लेखे हम भिखिया न माँगब जा ।
ठकुरे के लेखे नहि लउरि चलाइबि ।
सहुआ के लेखे नहि डांड़ी हम मारब जा ।
अहिरा के लेखे नहि गइया चराइबि ॥
भंटऊ के लेखे न कवित्त हम जोरब जा ।
पगड़ी न बान्हि के कचहरी में जाइबि ॥
अपने पसिनवा के पइसा कमाइब जा ।
घर भर मिलि जुलि बाँटि चोंटि खाइबि ॥4॥

हड़वा मसुइया के देहिया ह हमनी के ।
ओकरे के देहिया बभनओं के बानी ॥
ओकरा के घरे-घरे पुजवा होखत बा जे ।
सगरे इलकवा भइले जजमानी ॥
हमनी के इनरा के निगिचे न जाइले जा ।
पाँके में से भरि-भरि पिअतानी पानी ॥
पनहीं से पिटि-पिटि हाथ गोड़ तुरि देले ।
हमनी के एतनी काही के हलकानी ॥5॥

❑

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

अभ्यास

बहुविकल्पी/वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'अछूत की शिकायत' केकर कविता ह ?
   (क) महेन्द्र शास्त्री (ख) हीरा डोम
   (ग) रघुवीर नारायण (घ) गृहस्थ संत रामसेवक
2. 'अछूत की शिकायत' सबसे पहिले कवना पत्रिका में छपल रहे ?
   (क) भोजपुरी (ख) सरस्वती
   (ग) भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका (घ) उरेह
3. 'सरस्वती' पत्रिका के संपादक के रहे ?
   (क) महावीर प्रसाद द्विवेदी (ख) हजारी प्रसाद द्विवेदी
   (ग) गणेश चौबे (घ) पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय
4. पठित कविता सबसे पहिले कब छपल ?
5. हीरा डोम कहाँ के रहनियार रहीं ?

अति लघुउत्तरीय प्रश्न

1. 'अछूत की शिकायत' कवना चेतना के कविता हवे ?
2. हिंदी में कवना कविता से दलित चेतना के शुरुआत मानल जाता ?
3. 'अछूत की शिकायत' कविता में केकरा से शिकयत कइल गइल बा ?

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

लघुउत्तरीय प्रश्न

1. 'अछूत की शिकायत' शीर्षक कविता के भावार्थ लिखीं ।
2. 'अछूत की शिकायत' में दलित वर्ग के दु:ख-दर्द पूरा कलात्मकता आ मर्यादा का संगे व्यक्त भइल बा । एकर पुष्टि करीं ।
3. नीचे दिहल पंक्तियन में आइल कवनो एगो पौरारिणक कथा के अपना शब्दन के लिखीं-

   खंभवा के फाड़ि पहलाद के बलवले जे
   ग्राह के मुँह से गजराज के बचवले
   धोती दुरजोधना के भइआ छोरत रहे
   परगट होके तहाँ कपड़ा बढ़वले ।

भाषा

1. नीचे दिहल मुहावरन के अर्थ लिखीं अपना वाक्य में प्रयोग करीं-
   (क) कलेस उठावल
   (ख) मुँह देवावल
   (ग) कानी अँगुरी पर पहाड़ उठावल
   (घ) डांड़ी मारल, बाँट-चोट के खाइल ·
2. नीचे दिहल शब्दन के अर्थ लिखीं-
   हलकानी, इनरा, निगिचे, लउर, पगड़ी, दरमहा ।

परियोजना

1. रउवा जान-पहचान में केहू दलित कवि होखे त ओकरा से

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

अध्याय आठ

डॉ. भगवतशरण उपाध्याय

[इहाँ के जनम उत्तरप्रदेश के बलिया जिला के उजियार नाँव का गाँव में 1910 में भइल रहे । इहाँ के कई एक गो विश्वविद्यालयन में अध्यापन कइलीं, अंतिम बेरा मॉरिशस में भारत के उच्चायुक्त रहीं । डॉ. उपाध्याय संस्कृत साहित्य, प्राचीन इतिहास आ पुरातत्व के विशेषज्ञ मानल जात रहीं । इहाँ के सय गो से बेसी किताब छपल बा, जवना में महत्त्वपूर्ण बा- 'कालिदास इन इंडिया', 'विमेन इन ऋग्वेद', 'खून के छींटे इतिहास के पन्नों पर', 'कालिदास और भारत', विश्व साहित्य की रूपरेखा, भारतीय संस्कृति की कहानी । इहाँ के अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के तीसरा अधिवेशन (सीवान) के अध्यक्ष बनल रही । भोजपुरी भाषा साहित्य के विकास में एह भाषण के महत्त्व एगो शिलालेख खानी बा ।]

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

पारन

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन, सीवान, के अधिवेशन के संयोजक, कार्य-समिति के सदस्य, प्रतिनिधि अउर इहाँ पधारल सभे जन-गन के हाथ जोरि के परनाम करतानी । रउआँ जवन अध्यक्ष के ई भारी पद हमरा के देके हमार जस इज्जत बढ़वली हँ ओकरा खातिर हम रउरा सब के गुनगाही बुद्धि के त नइखीं सराह सकत बाकी आप सबके उदारता के जरूर सराहत बानी । साँच पूछीं त उदारता से भी बढ़ि के एमें सराहे के बात आपके साहस के बा जे अइसन आदमी के एह पद पर पधरवलीं जे एको अच्छरि भोजपुरी में ना लिखलसि, आ बोले के त ओकर ई पहिले मोका ह । बाकी मंदिर में जब पत्थर के मूरति पध रावल जाले त ओकर ग्यान आ देवताई ना देखल जाला । अरे ऊ त ओके पधरावे वाला ही ओमें देवता के प्रान-प्रतिष्ठा

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

कइ देला अउर पत्थर के ऊ मूरति देवता होके पुजाये लागेले । त हम त अपना के ऊहे पत्थर के मूरति समझतानी । ह, ई जरूर देखे के बा कि ए मूरति में कहाँ तक आप सब देवबुद्धि के स्थापना कइ सकल बानी । देखीं, हमार गेयान थोरे बा, बाकी हम जानतानी जे आपके धीरता ओसे जबर बा, एह से हम ईहे आप सब से अरज करतानी कि किरिपा कइ के हमके थोरी देर सहीं- हमके, हमरा गलत-सही अटपट भासा के, हमरा 'अधजल गगरी' गेयान के, अउर सबसे ज्यादा हमरा अगराइल अकचकाइल भाग के । दूर हिमालय से बोलवला पर हमके सहहीं के परी ।

हम हिमालय का पच्छिमी छोर से आवतानीं, रिखीकेस- हरिद्वार-कनखल का परे से, देहरा का दून से, देश का पहरुआ का द्वार से । उमर भी थाकि चलल । शेर याद आवता-

मंजिल की सख्तियों ने डराया बहुत मगर,
आवारागाने शौक न माने किसी तरह !

आउर चल पड़लीं । उहाँ देहरादून में हमसे भोजपुरी बोले वाला बस एक ही आदमी बा- पंडित गया प्रसाद

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

शुक्ल । उनका से हमार सदा भोजपुरिये में बतकही होले । घर का भीतर के बोली अंग्रेजी ह, कारन कि केरली पत्नी केवल अंग्रेजीये बोले-बुझेली, हिंदी बोलेली त ओकर छेछा-लेदर होखे लागेला । ए से जब सुकुल जी आ जालन त जइसे बरत टूटि के पारन होखे लागेला । जीव छछात रहेला जे केहू भोजपुरी बोलेवाला मिलि जाइत । याद आवता.... एक बेर दखिनी फ्रांस का जात्रा पर रहलीं, इटली से पेरिस जात रहलीं । आधी रात के, जब घोर निंद्रा में सूतल रहलीं तबे गाड़ी इटली के सरहद पार कइलसि । एगो बर्थ पर हम रहलीं आ एगो पर एगो नौजवान गोरा रहे । पासपोर्ट देखे वाला अफसर आइल । अंग्रेजी में बोलि के हम ओके आपन पासपोर्ट देखावे लगलीं । तबतक दूसरा बर्थवाला नौजवान-जवन पाछे जनलीं कि अमेरिकन ह-अकचकाइल, ऊठल आ कूदि के हमरा गरे लागि गइल, कहलसि कि धनि भाग कि अंग्रेजी सुने के मिलल । तीन महीना से फ्रांसीसियन का बीच में रहलीं ह मगर कम्बख्त जवन अंग्रेजी जानेले स तवनो ना बोलस । आपन भाषा

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

अइलीं कि एगो नर्स दउरल आइल, कहलसि-कुछ इतालवी कुछ अंग्रेजी में- कि एगो अंग्रेज अपेंडिसाइटिज से मर रहल बा, ओकर साध बा जे हमसे मरे का वक्त केहू दू सब्द हमरा भाषा के बोलि दे । हम गइलीं । जइसहीं पहुँचलीं, जैसे ओ नौजवान में नया जान आ गइल । दम ऊ हमरे गोद में तुड़लसि पर मरत-मरत कहलसि कि धनि भाग जे ए बिदेस में हमके हमरा बहिन-महतारी के जबान बोलेवाला मिलि गइल, अब हम खुसी से मुअबि, इचिको कलेस ना होई, धन्यवाद ! अमेरिका में कई साल आपन भाषा बे बोलले रहि के जब स्विटजरलैंड पहुँचलीं त बर्न नगर में भारतीय दूतावास में डॉक्टर सत्यनारायण सिंह का साथे भोजपुरी में बतिया-बतिया के अघा गइलीं । त भाषा के ई शक्ति ह ।

हम आप सबसे साहित्य का बिषय पर कुछ कहे के चाहतानी । भाषा का संबंध में एक से एक पंडित अपने का सम्मेलन में बोलि गइल बाड़े, ओकरा संबंध में ओ लोगन से सुनलहीं होखबि, आगे भी आउर लोगनि से सुनबे करबि । हमके हमार अटपट 'भणिति' कहे के अनुमति दीं, ओके सुने के आदर देईं, अनुग्रह करीं, हम निहाल हो जाइबि ।

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

सब्दन से भाषा बनेले, पर सब्द भाषा ना ह । एही तरे भाषा से साहित्य बनेला पर भाषा साहित्य ना ह । अगर भाषे साहित्य होइति त ओह अनेक अफ्रीकी देसन के भाषा भी साहित्य कहइती स जहाँ भाषा बा पर साहित्य नइखे । तब ऊ कवन चीजु ह भला जवना का पइठि गइला से भाषा साहित्य हो जाले ? ऊ मनुष्य ह, इन्सान, लोग । सभे भाषा के साहित्य मनुष्ये बनावेला, पर सब साहित्य साहित्य काहें ना हो जाला, आ कवनो घटिया कवनो उत्तम कइसे हो जाला ? काहें कि घोड़ा, बकरी, कुत्ता जाति नियर मनुष्य जाति त ओके बनावेला पर मनुष्य ओ में पइठे ना । जब दरद के साथ, वेदना-संवेदना के साथ मनुष्य ओमें पइठेला तब भाषा साहित्य बनेले । ना त केतना हरियल आ हंस सुरहा ताल में रोज मारल जा रहल बाड़े, कहाँ वाल्मीकि जनमऽ तारे ? अरे जे क्रौंच-बध से द्रवे, अइसन जन जनमे तब 'आदि कवि' के संज्ञा मिली, चरितार्थ होई । आदमी त सभे जनम लेला पर सभे आदमी इन्सान ना हो जाला । कइसे गालिब कहले-

बस कि दुश्वार है हर काम का आसां होना ।
आदमी को भी मोअस्सर नहीं इन्सां होना !

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

आउरो इन्सान बनल भी कवनो आसान बात ना ह–

मत सहल हमें जानो, फिरता है....,

तब वाक के परदे से इन्सान नि..... ।

जे भाव–जातना–संवेदना अइसन संस्कारन से सजल ना ऊ इन्सान कइसन ? हीरा त करिया कोइला से बनेला पर संस्कारे से हीरा होला । संस्कारे से सोना अइसन हो जाला जे कसौटी पर कसल जा सके । इन्सान के एही महाभारत लिखे वाला महामना व्यास चिन्हले, जब तैतीस कोटि छछात देवता का रहत एलान कइलन–

गुह्‌ यं तदिदं ब्रह्म ब्रवीमि

न मानुषाच्छ्रेष्ठतरं हि किञ्चित्‌–

गूढ़ बाति कहतानी, भगवान व्यास कहताड़े, छछात साँच कहतानी, गुनि के कहतानी, गाँठे बान्ह –'मनुष्य से बढ़ि के, ओकरा ले ऊँच, एह धरती पर दूसर केहू नइखे ।'

एही से न 'हिन्दुस्तान हमारा' वाला इकबाल भगवान से धिक्कारि के कहले –'ऐ खुदा, देख तो तूने हमें क्या दिया और जो तूने हमें दिया उसे हमने क्या बना लिया ? तूने हमें पहाड़ दिये, हमने उन्हें काट–तराश कर रहने के लिए अपने घर बना लिये; तूने हमें जंगल दिये, हमने उन्हें

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

काट-छाँटकर उपवन बना लिये; तूने हमें सूखी-पथरीली ऊसर धरती दी, हमने उसमें अन्न की बालें उगाकर लहरा दीं; तूने हमें मिट्टी दी, हमने उससे रकाबियाँ तश्तरियाँ बना लीं; और खुदा, तूने जुल्म किया जो हमारे लिये अँधेरी रात बना दी, पर इन्सान की औलाद हम कि हमने उसे भी मंजूर किया पर बदले में हमने चिराग बना कर जला दिया, खलक को रोशन कर दिया ।'

अइसन इन्सान जब दर्द का साथे अपना भणिति में पइठी तब कहीं ऊ भणिति काव्य कहाये जोग होई, साहित्य कहाई । साहित्य केवल भाषा के चमत्कार आ शैली के रंगारंग चूनर ना ह । 'सुगना बसे पहाड़ पर हम जमुना के तीर !' दूर के वासी 'सुगना' आ जमुना तीर के वासी 'सुगनी' के मन जब मीत बनि के, एक होके रमी, तब जाके साहित्य बनी । फेड़ पर रहेवाला सुआ का हिया में, लोककथा में कहल जाला, जब केहू के हियरा बसेला अइसन कि एगो के जान छुअला से दूसरको तड़पे लागे, तब साहित्य बनी ।

आउर जियरा के तड़पला के बात आपसे का कहीं! गाँव के गवाँरिन के बात सुनि के एक ि हम सन्नाटा में

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

आ गइलीं । सरहजि-ननदोई का बीच हँसी के बात सुनलीं-सरहजि जवाब में कहलसि -'बतिया त साँचे कह ताड़ हो बाकी ई हमके बताव कि लड़ेले त नजरिया आ बथेला करेजवा, काहें ?' हमरा त लागल कि हजार हाल अवर अमरु, हजार बिहारी आ मतिराम ए पर वारि जइहें ।

हिन्दी, अंग्रेजी, फ्रेंच, रूसी आदि अनेक भाषा के कवितन के असर हमरा ऊपर परल, पर बचपने में जवन असर हमरा पर भोजपुरी का 'बटोहिया' के परल तवन अपरंपार बा । आजो हमरा पर ओकर असर ओतने ताजा ओतने गहिरा बा जतना बचपन में रहे । हम ओके अपना पढ़ल साहित्य का सबसे प्रभावशील कवितन में मानी लाँ। इहाँ तक कि प्रौढ़ वयसि में हम अपना एगो किताब के नामे सन् पचास में रखि दिहली -'तीन द्वार सिंधु घहराय' ।

शक्ति, प्रभाव आ प्रेरणा तीनों के खानि ह ई कविता पर जइसे एकदम निकट हो के भी, मर्म होके भी, आँखि अपना के ना देख पावे ओइसहीं निकट के कविता भइला से सायद रउरा सबको ओ पर ओइसन ध्यान ना जात हो जइसन हिन्दी कवितन पर जाला । हम त कहतानी कि जे हम विदेसी रहितीं आ भोजपुरी समुझत रहितीं त अकेले

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

'बटोहिया' पढ़ला-सुनला का बाद हम भारत देखे खातिर आपन घर-दुआर बेंचि के चलि पड़तीं । पढ़ले त आप सब ओके होखबे करबि । एकाध लाइनि फेर सुनीं-

सुन्दर सुभूमि भइया भारत के देसवा; से
मोरे प्रान बसे हिम-खोह रे बटोहिया !
एक द्वार घेरे राम हिम-कोतवलवा, से
तीन द्वार सिंधु घहराय रे बटोहिया !

जवना के अंग्रेजी में 'साउंड एकोइंग सेन्स' कहल जाला, ध्वनि मात्र से जेकर अर्थ गूँज उठे, ऊ महाप्राण के जगावे वाली लाइन ह-

तीन द्वार सिंधु घहराय रे बटोहिया !

कुछ भासनि के एकाध पंक्ति एही विधान के अनुसार हमरा यादि रहि गइल, जइसे मैथिलीशरण गुप्त के-

'जाग रहा है कौन धनुधर जब कि भुवन भर सोता है ?' जैसे अकेले एक ही लाइन में एगो समूचा 'एपिक' खड़ा हो गइल बा । आन्हर कवि, जे बिना लड़ाई देखले, होमर केवल ध्वनि मात्र का प्रेरणा से भोजन-युद्ध के वर्णन

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

And gods chasing the heels of mortals!

अर्थ कइला के कौनो जरूरत नइखे । हम कहबि, केवल ध्वनिये के बानी सुनाइबि- दुष्यन्त के, शकुन्तला का चलि गइला का बाद, अपना हिया से-

प्रथमं सारंगाक्ष्या प्रियया प्रतिबोध्यमानमपि सुखम् ।
अनुशयदुःखायेदं हतहृदयं सम्प्रति विबुद्धम् ॥

दुख के वेदना का ध्वनिये से नइखे ब्यापि जात ? एपिक के सरूप देखावे खातिर ई ध्वनिये काफी बा, जैसे गोसाईं जी के भरत का बिषय में महाप्राण के उपयोग-

जो न होत जग जनम भरत को
सकल धरम-धुर धरनि धरत को ?

'सकल धरम-धुर धरनि धरत को ?' ओही 'एपिक' रूप के सरूप ह । हम पूछतानी जे हमरा देस में 'एपिक' -वीरकाव्य-महाकाव्य एतना तादाद में काहें लिखल गइले ? ग्रीक में दू गो-तीन गो, लातीनी में एगो, इतावली में एगो, अंग्रेजी में दू गो, फ्रेंच में एगो, जर्मन में एगो-पर भारत के महाकाव्यन के जो गिनावे लागीं त पार ना लागी । से काहे ? काहें से कि एकरा तीन ओर गहिर-गंभीर सागर घहराता, दूसरी ओर संसार के सबसे ऊँचा, सबसे लमहर

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

पर्वतमाला बा- हिम के मुकुट पहिनले, गहरा नीला खुला आकाश अइसन दूसर कहाँ बा जेवना के रूप के अनंत बिस्तार से हमनी के..... विष्णु के सँवरिया रूप सजले ? एक के बाद एक ऋतु और कहाँ एतना नियम से आवेली स ? भला 'सुबह-बनारस, 'शामे-अवध', 'शबे-मालवा' और कहाँ बा ? एह सब का पृष्ठभूमि में फेर एक बेर पढ़ीं 'बटोहिया' के । हम त संजम का साथे, अत्यंत मीठ से बचाव करत, केवल कुछ ही पंक्तियन के बोलतानी-

जाहु-जाहु भैया रे बटोही हिन्द देखि आउ
जहवाँ कुहुकि कोइलि बोले रे बटोहिया !
पवन सुगन्ध मन्द अगर चननवाँ से
कामिनी बिरह राग गावे रे बटोहिया !
तोता-तूती बोले रामा बोले भेंगरजवा, से
पपिहा के 'पी-पी' जिया साले रे बटोहिया !

ए कविता में से पंक्ति चुनल कठिन समस्या बनि जाता, कारन कि हर लाइन जानदार बा, पूरा कविते उल्लेख जोग बा । काहें ? काहें कि कवि के जियरा अपना प्रतिपाद्य से एकाकार हो गइल बा, ओमें बसि गइल बा-

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

में, बिरहिन में । एही स्थिति से प्रभावित गुप्तकाल के कवि वत्स भट्टी अपना मन्द सौर का कविता में भारत माता के वर्णन करतारें–

चतुस्समुद्रान्त विलोल मेखलां ।
सुमेरु कैलास बृहत्पयोधराम् ।
वनान्त वान्त स्फुट पुष्प हासिनीं
कुमार गुप्ते पृथिवीं प्रशासति ॥

माता के पयोधर दूनो सुमेरु आ कैलास, चारों समुन्दर घहरात करधनी, आ समूचा तन बन-परम्परा से बनल, जवना में भाँति-भाँति के फूल निरंतर खिल रहल बाड़े स, जवना का ब्याज से भारत माता मुस्का रहल बाड़ी। त याद रखीं कि जबतक कवि अपना भाषा आ भाव में, अपना प्रतिपाद्य में जीही ना तब तक ओकर कविता जनगर ना हो सकी ।

संसार के प्रसिद्ध दार्शनिक बट्रैंन्ड रसेल से एक बार हमार बतकही भइल । ऊ संस्कृति आ साहित्य का बिषय में अपने लिखल बाति दोहरवले- कि ए सबके निर्माण तीन चीजु का संमिलन से होला- प्यार का पुकार से, गेयान का खोज से, आ सकल जीवधारियन के प्रति संवेदना से ।

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

मतलब कि 'प्यार का पुकार से' साहित्य बनेला, 'गेयान का खोज से' दर्शन आ विज्ञान, आ संवेदना से दूनों का संगम से संस्कृति । तब हमरा पूछे के परल कि पच्छिमी साहित्य में 'प्यार के पुकार' त बा, 'गेयान के खोज' त खूबे बा, पर भला साहित्य में सब प्राणियन के प्रति संवेदना कहाँ बा ?

हमरा इहाँ त साहित्य के पिता वाल्मीकि के आदि काव्य के जनमे संवेदना से भइल । सौ-सौ उदाहरन हमरा इतिहास में बा जेमें समरथ लोग कहले बा जे हमरा के राजपाट ना चाहीं, इहलोक-परलोक के सुख-स्वर्ग भीं ना चाहीं, मुक्तिओ ना चाहीं, चाहीं हमके बस एके चीजु कि संसार के जीव मात्र दुख-दर्द से छूटि जायँ, सुखी हो जायँ । हम बतवलीं कि का वाल्मीकि, का कालिदास, सभी कवियन का नायक-नायिकन का दुख में जीव-जन्तु, तरु-पल्लो तक दुखी होखेला । जवन सुख कवि अपना खातिर चाहता ऊहे दुसरो खातिर चाहता-ओंकर भौंरा फूल तोड़ता, ओके प्याला नियर बना के ओमे मधु यानी शराब भरता, फिर अपना भौंरी के पहिले पिया के आधा बाँचल जूठ अपने पियता । हथिनी पराग से सुगंधित जल पहिले

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

उँड़ेल देत बिआ, हाथी आपन प्यार परगट करे खातिर आपन सूँड़ हथिनी का पीठ पर रखि देता । चकवा कँवल के डंडी तूरि कँ पहिले अपने चाखि के, कि कहीं कड़ुआ ना होखे, चकवी के खाये के देता । कामदेव बसन्त के लेके दुष्यंत का बाटिका में जाता पर शकुन्तला के निकाल देला से दुखी राजा के देखि के बसन्त के सिपाही कौनों वार करे के तैयार नइखे होत- आम बौरा गइल बाड़े स, भौंरन के ओठ पराग से भरि गइल बा, इचकी कोठ खोल दे त चराचर गमकि जाई, पर ना, ऊ काट नइखे रहल त काहे से कि मानव-दुष्यन्त दुखी सामने बा । कुरबक जरि से पुलुई तक कलिया गइल बा, पर एक्को कली खिल के फूल होखे के तैयार नइखे, काहें कि दुखी मानव सामने बा । सरद ऋतु के बितते अनायासे कोयलरि के कंठ फूटि जाला आ इहाँ सरद कबके बीति गइल बाकी कोइलरि कंठ में आइल बानी कंठे में जाँत देति बा, फूटे नइखे देति, काहे कि दुखी दुष्यन्त सामने बा। अब कामदेव के हियाव का परो, से ऊ घबड़ा के अपना तरकस से आधा खींचल बान तरकसे में उलटा लवटा देता ! त भाई सभे, इहाँ के साहित्य के परमान त ईहे ह, कि आदमी त दूसरा के हित चहबें करी, पसु पंछी, पौधा-पल्लो भी आदमी

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

का दुख दर्द से दुखी होखे लागे । अगर मनुष्य प्रकृति से सहचार ना करी त भला ऊ 'अशरफुलमखलूकात' -सृष्टि के सबसे महान जीव कैसे कहाई !

अब ए दृष्टि के, ए परमान के, भोजपुरी साहित्य पर घटा के देखल जाय, तनी गंगाजी के गीति लेलीं, बिआह, जनेव के, विरह के गीति लेलीं, सोहर, बारहमासा लेलीं, सब भाव परधान मिली जेके सुनि के आँखि छलछला जाली । पच्छिम खड़ी बोली का इलाकन के गीति सुनले बानी- अरे अंगरेज ने इंजन चलाया रे, गाड़ी चलायी रे, पानी का बंबा चलाया रे- अरे राम, गीतो के दुर्गति ! इहाँ भोजपुरी के गीति सुनि के सोफियाना से सोफियाना आदमी डहरि में रूकि के सुनि के निहाल हो जाय । पर एगो बात बा, तनी कान देके सुनीं-

कालिदास कहले जे पुरान सभे ठीक नाहीं ह, आ न कुल्हि नया खराबे ह । पर हम जे भोजपुरी के नई कविता पढ़तानी त लागता कि पुरनके सुघर बा । नवका लगता कि खड़ी बोली के कवितन के निचोड़ ह, छाड़न नियर । कवि लोग समझता कि भाषा बदलि गइला से सब बदल गइल ।

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

कहीं-कहीं पुरान बारहमासा के चासनी । हम कहतानी कि जेकरा पास कबीर आ घाघ के धन बा उहाँ ओ लोगन के सुर काहें नइखे आवत ? 'जो घर जारै आपना, चले कबीरा साथ' के ललकार आ 'पंडित चुंप-चुप बेसवा भइल' के बोध कहाँ बिला गइल ? विश्वविद्यालय वाला कवियन से अच्छा त हमरा लागता जे प्रकृत देहाती कवि बाड़न । सुनी ले कि बनारस के एगो कजरीकार कवनो बड़कवा से एक बेर नाराज हो गइल आ अइसन कजरी लिखलसि कि उनकर बाहर निकलल कठिन हो गइल । हमरा बस एके-दू डाँड़ी याद बा पर ओतने असाधारन चुटीला व्यंग्य बा-

खाये के चाहीं सकल पदारथ
बतियावे के गबर गबर ।

देखीं कि भोजपुरी में केतना शक्ति बा । बड़कवा के उघारि के धइ दिहलसि । काशी के 'बदमाश-दर्पण' त लामिसाल बा जवन कविता के गहराई में त पइठिये गइल बा, भोजपुरी द्वारा ओह घरी के समाज के उघारि के राख देता ।

भाषा साहित्य का भाषा पर कुछ कहे के चाहतानी। काहें कि साहित्य सिरजल भाषा में जाला, भषे में सोचल

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

भी जाला । रउरा परतिया के देखि लीं, बिना भाषा के सोचि ना सकीं । पहिले जबतक भाषा ना रहे तब तक विचार भी ना रहे, जब भाषा भइल त विचार गुनाये लागल । विचार भाषा का पंख पर चढ़ि के ही मानस में परगट होला । जवना भाषा में भोजपुरी कविता आ कहानी लिखल जा रहल बा ऊ बनावटी लागता, बनावल, प्रकृत ना । भोजपुरी में पइठि के ओकरे हो के नइखे लिखल जात । साहित्य बनावटी बोली ना ह, ऊ पूरा संस्कृति पूरा तहजीब ह, लोक-दसा के । सबका ओमें समाये के चाहीं । कई बार त अइसन बुझाला कि खड़ी बोली का शब्दन के भोजपुरी अवतार सामने बा, आ जइसे कृत्रिम हिंदी सरकारी शब्दावली समझे खातिर मूल अंग्रेजी के याद करे के परेला जइसे 'अधिशासी अभियन्ता' के माने समझे खातिर कौनो संस्कृत के कोश ना देखे के परी, अंग्रेजी मूल 'एग्जिक्यूटिव इंजिनियर' याद करे के परी, आ जैसे रेल में पाखाना आ शौचालय का जगह 'प्रसाधन' लिखल देखि के संस्कृत वाला अकचका जाई, ओकरा पर बिजुली गिरि परी, काहें से कि संस्कृत साहित्य में एकर खूब-खूब इस्तमाल 'सिंगार'

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

के भी परम्परा छोड़ि के अंग्रेजी का 'ट्वायलेट' के अनुवाद कई दिहले ! भोजपुरी में अइसन परम्परा ना डाले के चाहीं। नया बाहर से आओ, जरूर आओ, आई ना त भाषा समृद्ध कइसे होई ? पर छाड़न का रूप में भाषा आ भाव मति आओ । स्वयं भोजपुरी शब्दन के भी उपयोग से शब्द शक्ति बढ़वला के काम बा जवन नइखे होत !

भाषा में हमरा कवनो खोट नइखे । एह से केवल तत्सम शब्दन के लेके पूरी इबारत बनाके केवल क्रियापद भोजपुरी जोड़ दिहला से भाषा भोजपुरी ना हो जाई । बात सही बा जे भाषा क्रियापद से ही बनेले, बाकी शब्द कवनो होखे । पर भाषा भाषा होखे के चाहीं, शब्दन के जोड़ ना । जब इटली के महाकवि दाँते आपन महाकाव्य 'दिवीनो कोमेदिया' लातीनी छोड़ि के इतालवी में रचलसि त उहाँ ऊहे तत्समवाला झगड़ा खड़ा हो गइल जवन आज हिन्दी में बा आ ओकरे देखादेखी भोजपुरियो में घर करि रहल बा । इटली में चार सौ साल तक ईहे समस्या 'केस्तोना दे ला लिंगुआ' नाम से चलल । आखिर शुद्धतावादी लोगनि के आपन जिद छोड़ि के जनबोली 'लोम्बार्द' स्वीकारे के परल । मगर एकर मतलब ईहो ना ह कि बिशेष मतलब

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

के शब्द तत्सम ना लिहल जाय । पर ऊ तत्समें रूप में लिहल जाय त भला, एह से मूल के अर्थ से सिलसिला कायम रही । जइसे 'समस्या' के 'समसेया' कइ के बिगाड़ के इस्तेमाल कइला के जरूरत नइखे आ ना भोजपुरी शब्दन के शुद्ध करे के । ना त ऊहे बनारस 'वाराणसी' वाली बात हो जाई, गोया 'बनारस' भारत के जनता ना अंग्रेज बनवले ह स । अरे 'रे' आ 'ण' के एक साथ उपयोग के इहे हाल होला । वाराणसी स्वभाव से ही 'बनारस' हो गइल ।

हमरा पास आजकल किसिम-किसिम के भोजपुरी के पत्र-पत्रिका, कविता आउर कहानी-संग्रह आ रहल बाड़े स । उन्हनी के पढ़ि के एगो अवरू धारना हमरा मन में पइठल-अनेक बार स्थानीय शब्दावली के प्रयोग अधिक कइल जा रहल बा । एगो बगसर से कहानी-संग्रह आइल । निकहा-निमन संग्रह । कहानियन के वस्तु-विषय सब मजगर, बाकी ओमें शब्दन के चुनाव-उपयोग अइसन निचाट बगसरिया-दखिनहा रहे कि समनहीं गंगा पार उजियार के रहे वाला हम आउर जहाँ-तहाँ मतलब ना समुझ पाईं, हुमचि के जब सोचीं तब समुझि आवे । हमरा डर बा जे

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

सायद ओकरा परचार के आघात पहुँची, शायद ओकर बिस्तार संकीर्ण हो जाई ।

ना त भोजपुरी के सीमा रउरा चाहे जेतना खींची ओकर बिस्तार साधारन नइखे । अउर ओहू से अधिक बिस्तार ओकरा परभाव के बा । रउरा हजार मैथिली कहीं मगर हमरो कहे में कवनो परहेज नइखे जे विद्यापति हमरो हउअनि, हमरा बोली भोजपुरी से परभावित । सोचीं तनी–जनम अवधि हम रूप नेहारल नयन न तिरपित भेला–एमें 'भेला' 'भइले' के न फरक बा ? भला–

नव वृन्दावन नव नव तरुगत नव नव विकसित फूल
नवल वसंत नवल मलयानिल मातल नव अलि कूल

अउर 'झड़प' जी का तत्सम प्रवण 'नटराज' का रूप में का फरक बा ? आ प्राचीन साधक भुसुकिपाद के ही लेलीं–

आज भुसुकि बंगाली भेली
चंडाली निज घरनी केली

भला भोजपुरी आ एमें का अन्तर बा ? खैर, ई बात हम परभाव के संबंध में कहतानी । आ परभाव छोड़ भोजपुरी के उपयोग त हो मारिशस, फीजी से पूरबी

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

अमेरिका-सुरिनाम तक फइलल बा । नागपुर का विश्व हिन्दी सम्मेलन में जहाँ देस-देस के लोग आइल रहे आ ओ लोग के हिन्दी का दायरा में लीहल गइल ऊ दायरा वास्तव में भोजपुरी के ह, जदपि हिन्दी से भोजपुरी का कवनो विरोध नइखे, जवन भोजपुरी के क्षेत्र ह तवन त हिन्दी के क्षेत्र हइये ह । उहाँ बिदेशी भोजपुरियन के विचित्र संगम भइल । एगो गोरा अमेरिकन-खाँटी अमेरिकन-कविता भोजपुरी में पढ़लसि कि 'हम त भोजपुरी में कविता करीले, करबे करबि, करते रहबि !'

जहाँ तक परभाव के बाति बा त ऊ त अइसन बा कि जवन पाली-अर्धमागधी भोजपुरी के पुरखिन कहल जाले-हालाँकि हमार विचार ओह संबंध में दूसर बा, कि ऊ पुरखिन तब के जन बोली ह- आ जवना में बुद्ध महावीर उपदेस कइलनि ओही के बिरवा आज श्रीलंका में लागि के सिंहली के अश्वता बनि गइल बा, आ अगर पटनहिया-भोजपुरिया सिंहली शब्दन पर तनिक विचार करे त ओके समझे लागी । अरे हम रउरा से का कहीं- रूस का दखिन में जिप्सी-बन्जारन का एगो बूढ़ से पुछलीं- भोजपुरिये में कि 'रोम ?' यानी कि तूँ 'रोम' हउअ ?

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

पाणिनि के सत्र 'रलयोरभेदाः' के सोचि के । ऊ बूढ़ जिप्सी झट से कहलसि कि 'नेई, रोम दराज ।' आ रोमनिया की ओर हाथ उठा दिहलसि । फेर हम पुछलीं- तब का 'लोम ?' जवाब दिहलसि कि 'नेइ, लोम फिलिस्तीन, हम त 'डोम', 'कुरइया वाला डोम!' हम दंग कि 'डोम' त ठीक, बाकी 'कुरइया वाला' का ? तबे अपना आजी के एगो पुरान व्यंग्य याद परल जेही के बबुआ तेही के दाना, तेही के कुरुई ! बस सब उजियार हो गइल । पुछलीं, दउरी-सूप-कुरुई वाला डोम-बँसफोर ? जवाब मिलल जे 'हँ, हँ, नाट- डोम ।' सोचला पर याद परल कि जे के ई 'नाट' कहता ऊ रसरी पर चढ़ि के नाचे वाला 'नट' ह । अकारन नइखे जे मनु अपना स्मृति में नट, नाटक में भूमिका खेले वालन आदि के भी डोम का साथे अछूत मनले बाड़न । मतलब कि हमार भाषा बड़ा जनगर बा, ओके आंचलिक मति बनावल जाउ ।

आ जहाँ तक तत्सम शब्दन के अनुवाद के सवाल बा ओहू में सावधान रहला के जरूरत बा । शब्दे के ना, हम त चाहब जे विश्व के आ सबसे पहिले संस्कृत के साहित्य अनूदित होके भोजपुरी में आ जाय, पर सावधानी

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

से, अर्थ के अनर्थ कइके ना । एगो घटना लखनऊ के याद आवत बा- एगो पछिमहा कवि निराला जी से बार-बार कहि के अति कइ दिहले कि हम रामचरितमानस के खड़ी बोली में अनुवाद कइ रहल बानी, आदेश पाईं त सुनाईं । निराला जी कहले कि सुनाव । कवि जी सुनवले-

मूल- **रघुपति कीरति विमल पताका**
दण्ड समान भयऊ जस जाका

अनुवाद- **राम सूर्य कुल की है झंडी**
लक्ष्मण उस झंडी की डंडी ।

अभी उनका पढ़ला के आवाज गुँजते रहे कि केहू देखल केहू देखबो ना कइल बाकि सुनल सभे निराला जी का थप्पड़ के आवाज तड़ाक से कवि जी का गाल पर !

हमरा जब-जब समय मिलेला तब-तब हम, लिखला के थकान मेटावे खातिर, फिल्म देखे जाईला । संसार के करीब-करीब सभी भाषन के फिल्म देखे के हमरा मौका मिलल बा । बाकी हिंदी के सगरे फिल्मन में हमार मन जवन हरले बा तवन ह भोजपुरी के 'बिदेसिया' । हम एतना लिखलीं पर फिल्मन पर कबो ना लिखलीं । बाकी बिदेसिया

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

लिखलीं । ओपर भी भोजपुरी फिल्म अपना सम्प्रेषण शक्ति में अनमोल बाड़ी स ।

एक बात आउर कहबि । मन-कान लगा के सुनि लीं- दार्शनिक से सन्त कहीं महान होला, काहें से कि दर्शन जहाँ ऊपर की ओर तर्क का जोर से बढ़ेला उहाँ सन्तबानी चारू ओर फइलि के ढाई अक्षर वाला प्रेम से छू लेले । कुल्हि दार्शनिक शहराती रहले, कुल्हि सन्त जनपदी देहाती । दार्शनिक देवभाषा में बोललनि, सन्त मानुस बोली में । एही से जहाँ शंकर ना समझल गइलनि उहाँ बुद्ध-महाबीर समझल गइलनि । आ जब ओही लोगन के आचार्य दार्शनिक भाषा में लिखे लगलनि, जनपदी भाषा छोड़ि दिहलन त दूनो धरम जइसे देहात से बिला गइल । गोसाईं जी, कबीर, रैदास बनल रहिहें ।

हमरा देस में कथनी अलग करनी अलग बा । लोगवा कहता कि हम पाँच बरिस में देस से छूआछूत, बाम्हन-डोम के भेद हटा देइबि । आ ऊ कइसे कि नाम का आगा से उपधिया; पाँडे, राय, सिंह, सहाय हटा के । भला हम पूछतानी कि बाल्मीकि, ब्यास, कालिदास, भवभूति, तुलसी का नाम का आगे पाँड़े लागल बा कि शर्मा-वर्मा ?

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

तब का जाति-पाँति ना रहे ? सवाल ई बा कि आपन आ अपना बेटा-नाती के बिआह रउरा दूसरा, बिसेस कर नीच कहाये वाली, जाति में करे के हिम्मत बा ? कइले बानी ? ना, त जाये दीं, झूठ के पेरीं मति ।

अब अन्त में, हमार मान्य श्रोता लोग, हम बहुत बोललीं, आप बहुत सुनलीं । सुनेवाला बोले वाला से सदा महान होला, काहें कि ऊ बोलेवाला के बरदास्त कइ लेला, सहि लेला । से रउरा हमरा के सहलीं । हम अपना सब के धीरज कभी भुलाइबि ना । हम बोललीं, आप सुनलीं, हम निहाल भइलीं, सरग के तरई छुवलीं । धन्यवाद !

❑

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

अभ्यास

बहुविकल्पी/वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. भगवतशरण उपाध्याय के जनम कहाँ भइल रहे ?
2. भगवतशरण उपाध्याय अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के कवना अधिवेशन के अध्यक्षता कइलीं ।
3. पठित रचना कवना विधा के ह ?

   (क) कविता (ख) भाषण

   (ग) निबंध (घ) कहानी
4. पठित पाठ में साहित्य के पिता केकरा के कहल गइल बा ?

   (क) वाल्मीकि (ख) कालिदास

   (ग) कबीरदास (घ) तुलसीदास

अति लघुउत्तरीय प्रश्न

1. बर्ट्रेंड रसेल का अनुसार साहित्य-संस्कृति कवना तीन चीज से बनेला ?
2. लेखक पर कवना कविता के सबसे बेसी असर पड़ल रहे ?
3. भगवतशरण उपाध्याय के परिचय लिखीं ।

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. भगवतशरण उपाध्याय के भाषण के सारांश लिखीं ।
2. भोजपुरी भाषा आ साहित्य के विकास में भगवतशरण उपाध्याय के भाषण के योगदान पर विचार करीं ।

परियोजना कार्य

1. विद्यालय में आयोजित कवनो समारोह में भोजपुरी में भाषण दीं ।

© copyright reserved to BSTBPC, Government of BIHAR (www.bstbpc.gov.in).
Publishing web/app/books will be a crime. Published by Abdiel Solutions (www.absol.in)